क्या परमेश्वर है? हां, वरना हम

सुन्दरता

की व्याख्या कैसे कर सकते हैं

मनुष्य न केवल चांद के अस्तित्व और चक्करों से ही बल्कि इसकी सुन्दरता की ओर भी आकर्षित होता है। चांद महीनों और ज्वारभाटों को नियन्त्रित करने के उपयोगितावादी उद्देश्य को पूरा करता है, और यह सारी पृथ्वी के वासियों के लिए दिलचस्पी का कारण भी है। स्पष्टतः, निकट से यह न तो उपयोगितावादी है और न ही सुन्दर, परन्तु ढाई लाख मील दूर से, पीले रंग का अर्ध चन्द्र या सफेद पूर्ण चन्द्र हर किसी के लिए, विशेषकर प्रेमियों के लिए अलग ही महत्व रखता है। क्या चांद को बनाने वाले के दिमाग में पृथ्वी के निवासियों के लिए व्यावहारिक और दिलचस्पी पैदा करने वाली दोनों बातें थीं।

चांद से ध्यान हटाकर पृथ्वी पर नीचे एक गुलाब को देखने पर मन में कई प्रश्न उठते हैं। यह पृथ्वी पर कैसे आया? इसका इतना संतुलित आकार, सुन्दर रंग और मोहक सुगन्ध क्यों है? यदि गुलाब का कोई व्यावहारिक मूल्य नहीं है, तो क्या इसे बनाने वाले के लिए सुन्दर वस्तुओं का कोई महत्व था? क्या उसने संतुलन, रंगों और सुगन्ध की प्रशंसा करने की वही समझ इन्सानों में डाली है?

सुन्दर वस्तुओं की सूची बनाने वाला थक जाता है। वर्जिनिया की शिन्नदोआह घाटी के सेबों के उपयोगी आहार बनने से बहुत पहले, बहार के मौसम में वह वादी किसी कलाकार की कल्पना से भी अधिक सुन्दर लगती है। फिर, पथरीले पहाड़ों में बसन्त का मौसम खनन और पशु फॉर्म से भी बड़ा लगता है। समुद्र में सूर्योदय का दृश्य पृथ्वी के एक और चक्कर से बढ़कर लगता है।[1] बुलबुल के गीत, फूलों की महक, किसी मित्र की मुस्कुराहट और किसी प्रेमी की आंख की चमक, सब में एक ऐसा आकर्षण है जिसे शब्दों में बताना तो कठिन है परन्तु लगता वह अच्छा और वास्तविक है।

''मनुष्य में ऐसी दिलचस्प उत्तेजनाएं हैं जो हर व्यक्ति में अलग-अलग होने पर भी सब लोगों में अलग-अलग मिलती हैं।''[2] एफ. आर. टेनेंट ने लिखा है:

> दूरबीन व सूक्ष्मदर्शी में तारों से भरे आकाश से लेकर दो परमाणुओं के सिलिका पत्थर तक, भीतरी भागों के साथ-साथ अपने धरातल पर, फूलों में जिनकी ''अदृश्य लज्जा'' और ''समुद्र की सतह की गुफाओं'' में पाए जाने वाले बहुमूल्य

> पदार्थों में, प्रकृति प्रभावशाली या सुन्दर है, और अपवादों से केवल नियम ही सिद्ध होते हैं।[3]

प्लेटो तथा अरस्तु दोनों ने ही सुन्दरता पर चर्चा की है। इम्मानुएल कैन्ट ने ''द क्रिटिक ऑफ द एस्थेटिकल जजमेन्ट'' पर कई पृष्ठ लिखे जिनमें उसने दिखाया कि मनुष्य के ''स्वाद की परख'' और ''समझ या तर्क'' में बहुत अन्तर है।[4] ह्यूम की तरह ही, कैन्ट भी विशुद्ध तर्क को ही मानता था। डेविड ह्यूम से भी बढ़कर वह ''अन्दर पाए जाने वाले नैतिक नियम'' को मानता था। कैन्ट शायद दूसरे लोगों से बढ़कर ''तारों से भरे आकाश'' की सुन्दरता से मोहित होकर उनका गुप्त प्रेमी था।

जीवन और सुन्दरता दोनों ही वास्तविक हैं। इस कारण यह भी तर्कसंगत लगता है कि दोनों को बनाने वाला जीवित है और इनसे प्रेम करता है। स्पष्टत: सुन्दरता की प्रशंसा करने की विचारशील कार्य शक्ति केवल मनुष्य में ही है। ऑबर्न यूनिवर्सिटी में फिलॉसफी के प्रोफेसर विलियम एच. डेविस ने ध्यान दिया, ''केवल मनुष्य ही ऐसा जन्तु है जो सजावट करता है, और सभी मनुष्य सजावट करते हैं!'' सामान्यत: सजावट की कला को या सुन्दर वस्तुओं को कोई व्यावहारिक महत्व नहीं दिया जा सकता; परन्तु कैन्ट ने कहा कि, सुन्दरता में ''उद्देश्य होता है जिसे हम अपनी समझ से कह देते हैं कि इसका कोई उद्देश्य नहीं।''[5] परमेश्वर में विश्वास रखने वाले को सुन्दरता के अस्तित्व या उसकी प्रशंसा बयान करने में कोई कठिनाई नहीं है, परन्तु एक विकासवादी को जो ''केवल शक्तिशाली ही जीवित रह सकता है'' की शिक्षा का गुलाम है, यह विश्वास करना कठिन लगता है। विकासवादी थॉमस एच. हक्सले अपनी इस कठिनाई को बड़ी ईमानदारी से बताता है:

> सीनरी (दृश्य) और संगीत से मिलने वाला आनन्द जो निराशावाद के विरुद्ध मेरे साथ है और बताता है कि सृष्टि का बनाने वाला एक दयालु है। मुझे यह समझ में नहीं आता कि स्थिर रहने के लिए उन्हें क्या संघर्ष करना पड़ा। ये तो नि: शुल्क उपहार हैं।[6]

समझदार और विद्वान दार्शनिक, टेनेंट का कहना था, कि ''कई लोग उसके मन्दिर में सुन्दर द्वार से प्रवेश करते हैं।'' उसने सुन्दरता को परमेश्वर में विश्वास का एक मजबूत स्तम्भ कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं की:

> प्रकृति की सुन्दरता हर जगह ऐसे जैसे कि सुन्दरता सबके लिए और स्वाभाविक है-एक सामान्य अनुमान है जिसकी तुलना प्राकृतिक नियम की एकरूपता से की जा सकती है। कि प्राकृतिक वस्तुओं द्वारा भावना को उकसाने की बात उतना ही तथ्य है जितना यह कि वे गति के नियम का पालन करती हैं या उनमें फलां फलां रासायनिक मिश्रण हैं।

यदि ''परमेश्वर ने देश को बनाया'' और ''मनुष्य ने नगर को बनाया ... तो हमें इतनी व्याख्या मिल जाती है; परन्तु इस वाक्य में पाई जाने वाली परमेश्वर पर विश्वास की बात को नकारे जाने से लगता नहीं कि इसकी व्याख्या हो पाएगी।''[7]

पाद टिप्पणियां

[1]समुद्र पर सूर्योदय की वैज्ञानिक व्याख्या से यह उत्सुकता बढ़ती है: ''पृथ्वी तब तक चक्कर काटती है जब तक इसकी स्पर्श रेखा का स्तर दोबारा सौर ajimuth से मिल नहीं जाता।'' [2]लोरेन आइसले, *द इमेन्स जर्नी* (न्यूयॉर्क: रैण्डम हाउस, 1962), 65. [3]एफ. आर. टेनेंट, *फिलॉसफिकल थियोलॉजी* (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1930; रीप्रिंट, 1956), 2:91–92. [4]*कैन्ट सिलेक्शन्ज़* सं. थियोडोर मेयर ग्रीन (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'ज़ संस, 1957), 387 में इम्मैनुएल कैन्ट, क्रिटिक ऑफ़ जजमेंट।'' [5]वहीं, 408. [6]थॉमस एच. हक्सले, *कलेक्टड एसेज़,* अंक 2 *डार्विनियाना* (वेस्टपोर्ट, कन्न.: ग्रीनवुड पब्लिशिंग ग्रुप, 1970), 478. [7]टेनेंट, 2:91–92.